

23/12/2012

23/12

23/12

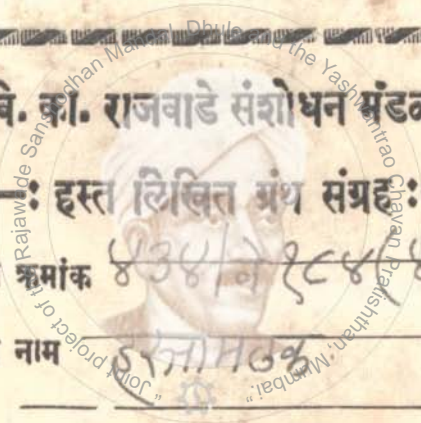
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह:—

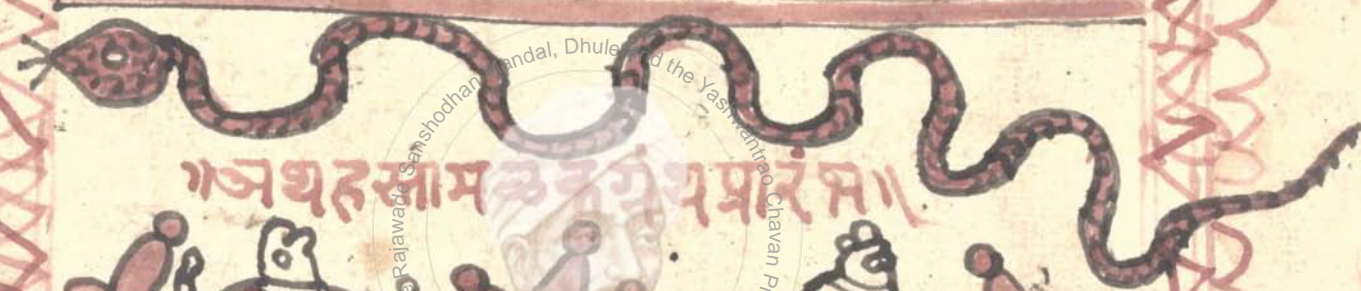
ग्रंथ क्रमांक ४३४/ने १८४ (४४०)

ग्रंथ नाम इतिहास

विषय म० वेदोत



1)



॥ अथ हसाम उक्तं प्रसरं ॥



॥ श्री लक्ष्मण ॥

॥ श्री गणेश ॥

॥ नारसीद ॥

बहाद



(2)



॥ श्री रामचंद्र ॥



(3)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वतीये नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
॥ श्रीकुब्जदेवताये नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीवासुदेवा
॥ ये नमः ॥ हास्तामळकग्रथपारमिच्छीतः ॥ जेवस्तु वेदांत
॥ प्रतिपाद्य ॥ अनाद्वैतजगदाद्य ॥ जो वद्याहि परमवंद्य ॥ तो
॥ वंदिला स्वये सिद्धसिद्धविनायेकु ॥ १ ॥ सुखाये मस्तकप्र
॥ चंड ॥ हरषाचें वोतलें तोंड ॥ जेवित अनंदाचिसोंड ॥
॥ येक हें अखंडयक दंत झळके ॥ २ ॥ ज्ञानते जें सतेज
॥ परशु ॥ अखंड स्मरनाचा अंकुशु ॥ अमय वरदे अति
॥ विश्वासु ॥ स्थानंदाचा सुरस लाडु देसी ॥ ३ ॥ प्रकृतिपु

(47)

॥ न षचरणदेनि ॥ त ङीघातिसियेकपनि ॥ तथावरीसह
॥ लासनि ॥ अगम्यगुणीशोभसि ॥ १ ॥ ज्यामाजीचराच
॥ ररहियासु ॥ जोसकवगुणाचानीजईशु ॥ तोवंदिजभी
॥ गणेशु ॥ परमार्थविजसुग्रंथार्थदावी ॥ ५ ॥ सारासार
॥ विज्ञागजनि ॥ जेविवेकदाविप्रबोधुनि ॥ तेवंदिठीसा
॥ रदाजननि ॥ आसारजिचेनिनिजसार ॥ ६ ॥ शुक्रुंबर
॥ सुवासी ॥ विदांबरइवकामसी ॥ चिदरहेंसेविज
॥ हिनिसी ॥ तेपरमहंसीआनट ॥ ७ ॥ स्वरचरणशक्ति
॥ विना ॥ वेदार्थचिपोथीजाणा ॥ तुझीयादृष्ट्यादृष्टीचा
॥ पान्हा ॥ सबाह्यकविजनानिविसदा ॥ ८ ॥ वाच्यवाच

॥१॥

॥१॥

४A) ॥ कवचना ॥ वाग्देवता जालि आपण ॥ तिचे नमस्कारा
॥ तांचेरण ॥ ज्ञानविज्ञान प्रकाश श्रव्ये ॥ ९ ॥ यापरी वाग्दे
॥ वता ॥ शंखी वदविनिः शब्दा ॥ अक्षरी दावी अक्षरा
॥ र्था ॥ सबाह्य परमार्था सर्वदातं ॥ १० ॥ आता वंदु कुळ
॥ देवता ॥ जेकांय कविराये कनाथा ॥ तिचे निनामे मी
॥ कविता ॥ अति श्लाघ्यता जवमि मानी ॥ ११ ॥ जं वना
या ॥ वरुपगुणोती ॥ उरोने दिमि कुळ देवता ॥ निर्दळ कुन
॥ कवि ह्ज अहंता ॥ येकासता मजने मजवि ॥ १२ ॥ मज
॥ तां कुळ देव्यां केवळ ॥ तव कुळ शिळ केले अकुळ
॥ मज्ज मजणाचे म्जळ ॥ केले निमळ मुळा न्वयो ॥ १३ ॥

(5)

कु

॥ यापरीयेकनाथा ॥ येक हृदेंनिजसक्ता ॥ अर्थपरमा
 ॥ र्था ॥ मुखे हें आद्वैतामाजीमीरवी ॥ ११ ॥ यापरीजेग
 ॥ दंबा ॥ अळे जापिठिकुब्बासिशोभा ॥ तेवंदीलीग्रथा
 ॥ रंभा ॥ कविसुक्कदंबाजीवन ॥ १५ ॥ आतां वंदुनिज
 ॥ सज्जन ॥ दीनदळ्याकघन ॥ ज्यासीजनवनविज
 ॥ न ॥ समसमानसमहें ॥ १६ ॥ सर्वसमानसमते ॥ हे
 ॥ १२ ॥ ॥ विष्णु उवलसंताते ॥ तें जे सा उवळें जें पुरते ॥ तेपर
 ॥ ब्रह्मा ते आकळिती ॥ १७ ॥ संताकपाकरीतिजेथें ॥ प
 ॥ रमानंदप्रकटेतेथें ॥ यागगीनिजसंतातें चित्ति
 ॥ वितें अनन्य ॥ १८ ॥ संतासीजेवनन्यशरण ॥ ह्यासि
 ॥ चो विळेसो विळेंपण ॥ ओसा होये परमपावण ॥ संतसज

॥ २ ॥

(5A)

॥ नकेठियं ॥ १९ ॥ सेवित संतर नति र्थि ॥ तीर्थे पाय वष्पा
॥ वोट विति माथा ॥ चतुस्त्रिते हान तिला ता ॥ ते संत
॥ फणार्थ वंदिते ॥ २० ॥ आतां वंदु श्रीजनार्दन ॥ ज्या
॥ धेनी नामे निर्दली नामा सिमाना ॥ जी वा ये नुरे जी
॥ वपणा सद्भावे आव वण करिता यि ॥ २१ ॥ साचार ज्या
॥ ज्या आव वण ॥ आव वना व वा वोळ वण ॥ वामत्रो
॥ धाये निर्दलना ॥ नाम स्मरण के लीयां ॥ २२ ॥ आगा
॥ ध श्रीजनार्दन नामा ॥ समूळ उ उ विकर्मा कर्म ॥ जा
॥ लोपति धर्मा धर्म ॥ प्रपंच परब्रह्म ये क हे प्रकटे ॥ २३ ॥
॥ वंदिता श्रीजनार्दन चरण ॥ जन्म मरणा सिये मर
॥ णा ॥ सासी जाडि या जन न्य शरण ॥ ब्रह्म परी पूर्ण स्व

(6)

श्या

सकळ

॥१॥

॥ ये हो ति ॥ २४ ॥ लिंग देहाचे मर्दना ते विजनासी अर्दना ॥
 ॥ या लागी नावे जना र्दना ॥ कुरी गर्जन वेदानुवाद ॥ २५ ॥
 ॥ या परी श्री जना र्दना ॥ करत काम कर विज्ञान ॥ या क
 ॥ रत लमळाचे व्याने ॥ करा विया व्यापण प्रेर कुजो जा
 ॥ २६ ॥ ग्रंथ विगीकेचे रूप ॥ बारा श्लोकी चि स्वरुपा ॥ परमानंदे
 ॥ सस्वरुपा ॥ अद्वैत दिप प्रकाशिका ॥ २७ ॥ अनपसु येक अपसु
 ॥ जन्म गं श्री मंत ॥ जे साग्र हामा जी दी पउस ॥ ते सा बहुस
 ॥ दो दी त जन्म ता ॥ २८ ॥ व्यासि बहु सा ल अपये ॥ नो छ
 ॥ खंड सो गि अपति ते ॥ या लागी नावे अपये ॥ जाणे नि
 ॥ वेदार्थे अभिधान कळे ॥ २९ ॥ जे पीतरांते तारी ती ॥ जे पु
 ॥ र्व जाते उद्वरि ती ॥ समुत्रया ते ह्यणति ॥ ते पुत्र संत
 ॥ ति दुर्लभ ॥ ३० ॥ शोक सताप कारक ॥ घरो घरी पुत्र दे

॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥

(6A)

स्व॥ अने कि जन्म ति अने का॥ स सुत्राचें मुख विरळा
 देखे॥ ११॥ कोणे ये के बाह्य णाचे गृही॥ परम भाग्यास
 व पाहि॥ जन्म लाचर्म देति॥ याचे वैभव ते हिने णि ले॥
 १२॥ जे विमुक्ति के माजिर ला॥ कां लोहे माजि गुप्त
 धन॥ ते विद्याचे हृदयें ज्ञान॥ इतर जनने ण ति॥ १३॥
 कोतं भावे वृत्ता वें नदन॥ सोतं भावे हास्य वदन॥ दो
 न्ही सांडो नि अपणा॥ सुखीच मौन्य अखंड हें॥ १४॥
 तो जन्मो नियां जाण॥ जन्म लोन द्युणें अपणा॥ या
 सी ना हि रजु के पणा॥ मां कोतं भावे कोण ता हा प्रोडि॥
 १५॥ टा हा न प्रोडि बाळ का॥ तेथे मिळाले स कळें लो

(७)

॥ क ॥ अ व च ह्य ण ति अ लो ळी क ॥ नि श्च यो यं क न क
र वें ॥ अ ॥ प्रे त ह्य णो त री प्रां न आ ठे ॥ अं ध ह्य णो त
री पा हा ता हें ॥ हें ग इ चेर डो ने नो का ये ॥ अ की न व मा
य बाळ क ॥ २७ ॥ ते जे अं गि न स मा ये ॥ देख तां ता न
सु क जा या ॥ के वळ वे डें न के मा ये ॥ या ज न्मा यी सो
य चो ज वे ना ॥ २८ ॥ पाळ किं दु न न की प डे ॥ कां सो
ब ल्या मु ग्या मा क्री डें ॥ त हि सं र्थ था न र डें ॥ इं द्र च ड
फ ड्य उ फू डी नां ॥ २९ ॥ स र्व था न क री त द न ॥ मा ते ने
सु र वी घा त ले यां था न ॥ चो खु न न क री स्त न पा न ॥ स्था
न दे पूर्ण नि स र्त स ॥ ३० ॥ स्त न पा न न क री स र्व था ॥ या
जा गी उ दा स जा हा लि मा ता ॥ कृ दान च री अ ठं म म ता ॥

॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥

(7A)

याजगिपिना हित पक्षी ॥ १ ॥ जालि वा वृवर्षे पुणी ॥
वेविंकरं उ पनयना ॥ जन्मोनिया सितांगले मोंन्या ॥
गाइ त्रिस्मरणन कृरी च ॥ २ ॥ गाइ त्रिमंत्रायें पठ
णा ॥ ये कृवेळ कृरि तांसे पूर्ण ॥ ते या सी ये ते ब्राह्मण
पणा ॥ जैसी विना पूर्ण पिया सी ॥ ३ ॥ पुत्राया निग्र
यो पूर्ण ॥ कृरी ता गाइ त्रिमंत्रायें पठना ॥ लांगी लागे
ब ब्राह्मणपना ॥ मज च्या हिं वर्ण विटाळा ॥ ४ ॥ न
कृरी गाइ त्रिस्मरण ॥ पियाणे पातला दवडुना ॥ ज
रिमाता ने दिख न्नपाना ॥ तरी दिन वदन तो नोहे
गा ॥ ५ ॥ जैसी या वाळ काची स्थिति ॥ ते चिसमई सह
जगति ॥ श्री शंकरा चार्या भिक्षार्थि ॥ त्याग्रहा प्रतिस्व

(४)

ये आठें ॥ १ ॥ वे हारे अति सधन ॥ अग्नि हो घिसु
ब्राह्मण ॥ शिक्षार्थ आचार्या सि आर्पण ॥ बहु सा
उजान प्रा र्थि ति ॥ ७ ॥ उपेक्षु न या चें शिक्षे सी ॥
साक्षे पें असे त्या ग हा सी ॥ देखो नि स्थिति बाळक
पा सी ॥ जाला सं तो सै आचार्या ॥ ८ ॥ देखो नियां त्या
चें चिन्ह ॥ जणै निया चें हृद हृ चें ज्ञान ॥ शंकरा चा
र्या सुप्रसन्न ॥ स्वये सं तो षो म सुख मय जाला ॥ ९ ॥
त्या सी देख तां च दृष्टी ॥ आचार्या सी अनंद बोटी ॥ त्या
च्या परमानंद मेषी ॥ अ ई का च्या पोटी प्रभा दत वे
जा ॥ १० ॥ अति सये सी श्री शंकर ॥ कृती ताला प्रभा
दर ॥ ज्ञान विज्ञान मिज निर्धार ॥ साक्षा हार प्र

॥५॥

॥५॥

(8A)

कृतावया ॥ १ ॥ श्लोक ॥ शंकराचार्य उवाच ॥ कस्य
 शिशो कस्य कुतो सिगता किं नाम ते हं कुत उगतो
 सि ॥ ये तं सप्रसं वदन्तर्मा कस्य मसीतये प्रीतिं वि
 वर्धनो सि ॥ १ ॥ टीका ॥ सि स्य ह्यणा व्याकरण ॥ नणे
 शिवापरा द्वजाना ॥ परीवाचका ये सा ज्ञाना ॥ यामा
 जीलासेना ॥ ५ ॥ बाळपणितिसज्ञाना ॥ याला
 गिवाचार्ये क्लेशप्रज्ञा ॥ जेविंधु कीमालीलरत्नजा
 ना ॥ ते ये हे स्पये काटीति ॥ ५ ॥ सिपिमाजी मोति होये
 पिरिसिपिसी कामानये ॥ ते विसज्ञानासी पाठे ॥ १ ॥
 षण होय निजांगि ॥ ६ ॥ ते विस्या बाळकाये ज्ञाना ॥

ज्ञाना ॥

(१)

मातापिताणेनतिजाण॥याचेप्रकाशावयाज्ञानविज्ञान॥
आचार्येस्येप्रश्नवेगं॥५॥तुंवेचाकोणाचाको
गीलकोण॥कायनामकोणवर्ण॥तुंसेकोणेनअग
मण॥पुढारेतुंसेगमणकोणे॥६॥माझेप्रितियेप्रि
तिप्रश्न॥तुंवाप्रितिणंकरावेपरीपूर्ण॥प्रीतिसुंवेसं
पूर्ण॥तेसेप्रतिवचनमजदई॥७॥प्रीतिनेप्रीति
अतिशयेवाटे॥प्रितिणेपरमप्रितिलोडे॥प्रितिप्री
तिचेफ्रेडिसांकडे॥प्रितिपुटेप्रियकरापटीये॥८॥
जैसाआचार्याचाप्रश्न॥यैकतांप्रकाशानिजज्ञान॥
जेवितागतारविक्रिणी॥सूर्यकांतसंपूर्णप्रकाशाकी
॥९॥देखोनीपूर्णमापूर्णचंद्र॥अशीतेनखवळेद्वी

॥६॥

॥६॥

(9A)

रसागर ॥ ते विदेख्येन प्रजादर ॥ ज्ञानाद्धि आपार उलथर्षरीते ॥ ६० ॥
होता वंसता चें आगमन ॥ को विक्रसां डी तिनिजमौन्य ॥ तें विआ-चा
र्या चें वचन ॥ विसर्जि मौन्य या वज्जन्म ॥ ६१ ॥ कां देखे नीयानव
घन ॥ मयो रज्जानं देवरी गर्जन ॥ ते विद्यावया प्रति वचन ॥ उ
ल्हास पूर्ण परी पूर्ण हें ॥ ६२ ॥ जे को नीजा चार्या चें वचन ॥ कर
त कामळक प्रकाशि ज्ञान ॥ या लागी ते पी आशी धान ॥ हस्ता
मळक ज्ञान या हेतु ॥ ६३ ॥ टीका ॥ ॥ हस्तामळक उवाचे ॥
नाहं मनुष्यो न च देव येन न ब्राह्मण क्षत्रिन वैश्यशुद्रान
ब्रह्मचारी न गृहिवनस्थो मिश्रुर्न याहं निज बोधरूपः ॥ २ ॥
॥ टीका ॥ हस्तामळक आपण ॥ आपुल्या स्वरुपाचे लक्षण ॥ दे
हाति तपरिपूर्ण पण ॥ स्वयेसंपूर्ण सांगतु ॥ ६४ ॥ मजलोकी मा
ली आपण ॥ मिमनुष्य न हे गा लाण ॥ मिमनुष्याचा आसापो
र्ण ॥ सबाह्य परी पूर्ण आसामी ॥ ६५ ॥ इंद्र चंद्रये मवरुना ॥ मि न

(10)

हे देवदेवी देवगण ॥ माझे नि देवा देवपण ॥ मी परमापूर्ण देवाधी
देवो ॥ ६६ ॥ विष्णु चिरं चि महेश ॥ हे चि माझे लंशांशा ॥ मी प
रमासा परेश ॥ जगदादि जै दिश मी चमी स्वये ॥ ६७ ॥ ये क्षराक्षे
सपिशा चक्र ॥ ते मी न के या चा चाळक्र ॥ सकळ स्रु ता चा पाळ
क्र ॥ मत्त सौ तिक दे स्व माझे नि लंगे ॥ ६८ ॥ मी न के गा ब्रा
ह्मण वर्ण ॥ माझे नी ब्राह्मण ब्राह्मण पण ॥ मी ब्राह्मण्य दे
व आपण ॥ पुत्र्य ब्राह्मण माझे नि ते जे ॥ ६९ ॥ मिं से त्रिन के गा
आपण ॥ क्षे चा चा प्र ता प तो मि लाण ॥ माझे नी क्षे वि या क्ष त्र पण ॥
शौर्य धैर्य वैर्य पुर्ण क्षे चा चे मि ॥ ७० ॥ मज ना हि वै श्य पण ॥
मी वै श्या चे नि लघण ॥ माझे नी वै शा वै श्य पण ॥ मी नी धी
नि धान वै श्या चे ॥ ७१ ॥ मी न के गा नी च वर्ण ॥ नि चा च नि च मी
आपण ॥ मज हो उ नी यां र वा लु ते पण ॥ आ न्या सी ज्ञान आ से
ना ॥ ७२ ॥ जे आ त ल तां मी ति नारी ॥ तो मी न के ब्र ह्म चारी ॥

॥७॥

॥७॥

(10A)

॥ माझे नीब्रह्म चर्या विशोरी ॥ सो गुणी नर नारी निष्टं व्य तो मिं ॥
॥ ७२ ॥ जे वी हो हरे ति हि ती की ती वरी ॥ ते ये मिथ्या नो वरानो
वरी ॥ ते विमुळी ना हि नर नारी ॥ मी ब्रह्म चारी निष्टं व्य ॥ ७३ ॥
दे हे ग हे द्रव्य दारा अशक्त ॥ ते सा न दे मी ग हस्त ॥ दे हे द्रव्य दारा
आ ना शक्त ॥ तो मी ग हस्त त्रि लो की ॥ ७४ ॥ व नी व सो नि वाण
प हस्त ॥ तो मी न दे जाण ये थे ॥ माझे नी जन व ना प्र शस्त ॥
व ण वा सी वि श्रां म म द्वा वे ॥ ७५ ॥ वे दे जा वी ले मी वे सी ॥ ते सा
मी न हे सं न्या सी ॥ न जा तु न जा की ले स्व कर्मा सी ॥ मी नि
स अ न्या सी ग ह दां री ॥ ७६ ॥ दे व म तु ष ये क्ष न के सी ॥ चारी
व र्ण न के ह्म ण सी ॥ ब्रह्म चारी ग ह स्ता सी ॥ तु न म नि सी की
क्षु र्ते ॥ ७७ ॥ ई तुं नी ठी न ठे उ नि जा ण ॥ ह्म णा व तुं ये थे व्रो ण ॥
ह्या हि स्वरु पा चें ल क्ष ण ॥ आ ई क स पु र्ण गु रू व र्या ॥ ७८ ॥

(11)

शुद्धबुद्धनियमुक्त॥ चिन्मात्रैकसदोदित॥ निजानंदं आनंदमरीता॥
तोमीयेथे निजबोधु॥ ८०॥ जरीतुनिजबोधस्यै आपना॥ यानि
जबोधाचें लक्षण॥ विशदसांगवें संपुर्ण॥ हेमनोगतं पोर्ण आ
चार्याचें॥ ८१॥ त्यामनोगताचे महिमाना॥ जातिगुह्यब्रह्मज्ञा
ना॥ साह्यसखा श्रीजनार्दन॥ येकपणग्रथार्थां जाते॥ ८२॥
येकाशरणजनार्दनी॥ जनार्दनची वक्रावदनी॥ ग्रंथीपर
मार्थभरनी॥ चदवीणी श्रीजनार्दन॥ ८३॥ श्रीजनार्दनेन
वलक्रेते॥ नावासी अक्षं गीते वीते॥ सेखेनावरुपासी अक्षं
गीते॥ अक्षं गक्रेते अक्षर॥ ८४॥ पुरुषे विनवेथं वनिता॥ ते
विश्रोते विनज्ञानकथा॥ श्रोता जातीयांदुषिता॥ ग्रथा-
पिसुरसता विरसतोये॥ ८५॥ जेविनपुशनाहाति॥ दिध
लिपद्रीणीयाति॥ तेविक्रथेचीउपहाति॥ होयनिश्रीति

॥८१॥

॥८१॥

(11A)

विण॥८६॥ कथेसि अवधान द्वीव न॥ तैणे विणें क्रोर डी जाण॥
केवळ होय पाज्ञान॥ जे अवधान श्रौयाचें॥८७॥ कथेसी
अवधान विपेहे॥ तैणे विण बाळ संजाये॥ केवळ रोडे ज
छि गये॥ ते पाव व्या होय दोंदी॥८८॥ दोंदी होति पदप
दार्थ॥ अक्षरी उथले अक्षरार्थ॥ कथेसि वो संडे परमार्थ॥
जे सादर संत परीसति॥८९॥ संत केवळ पर ब्रह्म मुक्ति॥
निय सावधानी स्थिति॥ यासी ही म्या वेळी विनंति॥
सावधानार्थी मुख्य हें॥९०॥ सता येनी मी ज्ञान संपन्ना
यासी मी ह्यणे दावे सावधान॥ हे थोर माझे उध्दरप
ण॥ क्षमा फेर्ण करावी॥९१॥ फेपे तु वळे स ज्ञान॥ तु
जे सर्व मुक्ति जनार्दन॥ तेथे परी ठारार्थ अपण॥ वेगळे
पण काधरीसी॥९२॥ जनार्दनची स्वये जन॥ हे ज्ञा



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com